दैनिक जागरण 20/10/2023

भिक्षावृत्ति समाप्त करने को भिखारियों का पुनर्वास जरूरी

- दून विवि की कुलपति प्रो. डंगवाल ने भिखारियों के पुनर्वास को समाज से की समर्थन की अपील
- भिखारियों के लिए डाटा संग्रह, विश्लेषण और नीतिगत निहितार्थों के महत्व पर भी जोर दिया

दून विश्वविद्यालय में आयोजित कार्याशाला में उपस्थित बाल अधिकार संरक्षण आयोग की अध्यक्ष डा. गीता खन्ना व कुलपति प्रो. सुरेखा डंगवाल • साभार- विवि

जागरण संवाददाता, देहरादून: भिक्षावृत्ति एक गंभीर समस्या है जो अच्छे सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रमों के बावजूद आधुनिक सामाजिक जीवन में भी बनी हुई है। देहरादून शहर भी जीवन के इस सबसे खराब स्वरूप से अछूता नहीं है। व्यवस्थित डाटा और शोध अध्ययनों की कमी के कारण, शहर में विभिन्न प्रकार से भीख मांगने वालों की संख्या का आकलन करना मुश्किल है। इससे उत्तराखंड जैसे राज्यों में भिखारियों के पुनर्वास के लिए आजीविका के वैकल्पिक कार्यक्रम बनाना एक बड़ी चुनौती है। यह बातें दून विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र विभाग की ओर से आयोजित कार्यशाला में बतौर मुख्य अतिथि राज्य बाल अधिकार संरक्षण आयोग की अध्यक्ष डा. गीता खन्ना ने कहीं।

उन्होंने इस विषय पर शोध के लिए दून विश्वविद्यालय के स्कूल आफ सोशल साइंसेज के डीन प्रो. राजेंद्र पी ममगाईं की सराहना की, जिसे देशभर के विश्वविद्यालयों और संस्थानों में पीएचडी शोध के लिए शायद ही कभी विषय के रूप में लिया जाता है। दून विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. सुरेखा डंगवाल ने दून में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए इस कार्यशाला के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने भिखारियों के लिए डाटा संग्रह, विश्लेषण और नीतिगत निहितार्थों के महत्व पर भी जोर दिया और ऐसे कार्यों में लगे संस्थानों को उनके उदार समर्थन के माध्यम से भिखारियों के पुनर्वास में समाज के समर्थन की अपील की।

प्रो. ममगाईं ने कार्यशाला के उद्देश्यों को रेखांकित किया और तर्क दिया कि भिक्षावृत्ति में लिप्त अधिकांश लोग दूसरे राज्यों से हैं। उन्होंने कहा कि ऐसी स्थिति में पुनर्वास उपाय करना अव्यावहारिक है। कार्यशाला में राज्य सरकार के महिला एवं बाल विकास विभाग, मानव तस्करी रोधी पुलिस, समाज कल्याण विभाग, राज्य बाल संरक्षण समिति के अधिकारी और बचपन बचाओ आंदोलन, आसरा ट्रस्ट, माहिला मोर्चा, भुबनेश्वरी महिला आश्रम जैसे नागरिक समाज संगठनों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। वहीं, दून विश्वविद्यालय से प्रो. हर्ष डोभाल, डा. सुशांत कुमार, डा. अंगसुमन सरमा, हर्षिता प्रजापति, डा. नरेश मिश्रा, पीएचडी छात्र आदित्य नेगी आदि शामिल थे।